द्रव्य (वैशेषिक दर्शन)

(Substance)

TDC-I. & Sub.

डॉ. विजय कुमार
दर्शनशास्त्र विभाग
एल. एस. कॉलेज, मुजफ्फरपुर

वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की मीमांसा हुई है। पदस्यर्थः पदार्थः अर्थात् वे सभी वस्तुएँ पदार्थ हैं जिनका नामकरण किया जा सके। मुख्यतः पदार्थ दो हैं– **भाव पदार्थ** और **अभाव पदार्थ**। भाव पदार्थ के छः भेद हैं– **द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय**। इस प्रकार वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की संख्या सात है– **द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव।** इन सात पदार्थों में द्रव्य को प्रधानता दी गई है।

द्रव्य– द्रव्य के दो लक्षण हैं– १. गुण और कर्म का आश्रय होना तथा २. अपने सावयव कार्यों का समवायी करण होना। यद्यपि द्रव्य गुण और कर्म से भिन्न है फिर भी यही गुण और कर्म का आश्रय है। द्रव्य के अभाव में कोई गुण अथवा कर्म संभव नहीं होता, बल्कि ऐसा भी कहा जाए कि जो गुण और कर्म का आश्रय है वही द्रव्य है तो ठीक ही होगा। इसके अलावा यह सावयव कार्यों का समवायी कारण भी होता है। सूत से कपड़ा बनता है। सूत कपड़े का समवायी कारण है। यह कपड़े में अन्तर्निहित होता है। इसी तरह कोई भी वस्तु द्रव्य के बिना नहीं बन सकती।

द्रव्य के नौ भेद बताए गए हैं– पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा तथा मन।

गुण– गुण द्रव्य के आश्रित होता है, क्योंकि वह द्रव्य में रहता है। द्रव्य की तरह वह भी सामान्य होता है, जैसे लाल रंग में लालिमा। यह द्रव्य का गुण होता है लेकिन इसका कोई गुण नहीं होता। गुण द्रव्य का वह रूप है जो निष्क्रिय है। इसमें गति नहीं होती है। न ही यह संयोग–वियोग का कारण होता है। यही कारण है कि इसे असमवायी कारण कहा गया है। जैसे सूत का रंग। रंग जो सूत से संयुक्त होने के कारण वस्त्र का– जो सूत से निर्मित होता है, स्वरूप निर्धारित करता है।

वैशेषिक दर्शन ने चौबीस प्रकार के गुण को स्वीकार किया है–

रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, संख्या, परिणाम, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, गुरुत्व, द्रव्यत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म।

कर्म– शरीर के द्वारा होने वाली क्रिया को कर्म कहते हैं। यह भी गुण की तरह द्रव्य में रहता है। किन्तु दोनों में अन्तर यह है कि गुण निष्क्रिय तथा कर्म सक्रिय होते हैं। कर्म के द्वारा ही पदार्थों के बीच संयोग और विभाग होता है। स्थानान्तरण का कारण कर्म ही होता है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और मन इसके आधार हैं। यह दिक्, काल और आत्मा में नहीं होता, क्योंकि इनमें कोई गति नहीं होती।

सामान्य– मोहन, सोहन, सीता, गीता आदि के रूप, रंग, चाल–ढाल आदि में अन्तर होता है जिसके कारण हम उन्हें अलग–अलग नामों से पुकारते हैं। किन्तु इन विभिन्नताओं के अतिरिक्त कुछ ऐसी चीज उनमें अवश्य होती है जिसके आधार पर हम उन्हें मनुष्य कहते हैं और वह है– मनुष्यत्व। उनमें मनुष्यत्व सामान्य रूप से देखा जाता है। उस समानता को ही सामान्य कहते हैं।

सामान्य के तीन भेद हैं–

१. पर सामान्य – यानी सबसे बड़ा सामान्य। जो जाति सब व्यक्तियों या वस्तुओं में रहती है। इसके अन्दर सभी सामान्य समाविष्ट हैं।

२. अपर सामान्य – सबसे छोटे सामान्य को अपर सामान्य कहा जाता है। यानी जो सबसे कम व्यक्तियों या वस्तुओं में पायी जाती है। जैसे घटत्व।

३. परापर सामान्य – जो सामान्य दोनों के बीच का होता है उसे परापर सामान्य कहते हैं। जैसे – द्रव्यत्व।

विशेष – अभेद और भेद, एकता और अनेकता प्रायः इस संसार में देखी जाती है। अभेद या एकता को सामान्य कहते हैं तथा भेद और अनेकता को विशेष। राम, श्याम, मोहन, सोहन आदि मनुष्य पशु से भिन्न हैं, यह भिन्नता उनकी विशेषता के कारण ही जान पड़ती है। परिभाषित करते हुए कहा गया है कि निरवयव और नित्य द्रव्य की जो विशिष्टता होती है उसे की विशेष कहते हैं। दिक् , काल, आकाश, मन, आत्मा तथा पृथ्वी, जल, तेज, वायु के परमाणु नित्य होते हैं और निरवयव होते हैं। इनमें जो अन्तर है वही विशेष है।

विशेष असंख्य होते हैं।

विशेष नित्य होते हैं।

विशेष अगोचर होते हैं।

समवाय – समवाय सम्बन्ध नित्य होता है। यह वैसे पदार्थों में होता है जो सदा संलग्न होते हैं। इन्हें अयुतसिद्ध कहते हैं। अयुत्तसिद्ध वस्तुएं वे हैं जिनका पृथक् अस्तित्व नहीं रह सकता है। जैसे गुण और द्रव्य, सामान्य और विशेष। गुलाब के फूल और सुगन्ध के बीच जो सम्बन्ध है वह समवाय सम्बन्ध का परिचायक है। कुर्सी और उसके अवयवों के बीच जो सम्बन्ध होता है वह समवाय सम्बन्ध है।

अभाव – वैशैषिक दर्शन के द्वारा प्रस्तुत छः भाव पदार्थों के बाद अभाव पदार्थ का स्थान है। सामान्यतः यह कहा जाता है कि जिसका भाव ही नहीं हो उसका ज्ञान कैसे हो सकता है। किन्तु अभाव का ज्ञान हमें होता है। रात में हमें चाँद और तारे तो दिखाई देते हैं लेकिन सूर्य नहीं दिखाई पड़ता है। सूर्य का रात में नहीं दिखाई देना सूर्य का अभाव है।

अभाव के प्रकार–